



[illegible]

नायगिरे से का ले मा भ क नी यु वि वा ॥ क म न ट क पि भ स क न सा ध न वि वि
पा ह ॥ त ह मा न उ स्य ह क ल य उ ॥ स म य ॥ ग्य ग्य ग्य ॥ क ली स म य व य
थी व्वा न प कि ॥ नि द म म ॥ दि य म स म य म ग म कि रा यी पालि द ह वृ ज ग क लि
म कि न य ॥ ना ग गृ ह क दि न ज ल न ल न

सत्य का वन
कन पीज पीज
त्रय प्रिय विस्व पुत्र उ
वीर नावुन एव नृपति क संस्थ
धनं नि नम्य स्त्रीष धनयूगल कं व क व द्वा न्न न द्य क व व द्वा न्न न द्य क व व द्वा

नस्वके कामवृत्तवामपाशु धारी उवतूप ह हवकु वामस्वापय ॥ तेषां हृदी जं प्रिज ह। कं नि सि
वि त्वा क ह स्त स्वापयत् ॥ मृ न क श्य या नि व सु नि न नां व सु उ व प म नां क म ख व म ग म दि म स्मि
न स न ॥ मृ दि पि पु ये थ ग कि का य त्वा ज्य स्वापयत् ॥ ल व न गु ठ नी ल ल गु ना दि स्वा न पान
वि ही मृ ह्म धा उ प न न ला दि सर्व स की क ला य स्वापय ॥ ~~अथ न स्वापन वि वि~~ ॥
॥ अथ प्रका वि वि मा ह ॥ आ दी गु न म ध न वि प न श ग म ना दि कं क था न् ॥ न न को ध द व गा स मा

वि क र्था म मा म मा न् ॥ ॥ अं स्व रा व गु ह्म सर्व ध र्मा नां स्व रा व गु ह्म रं पू न्मा गां क्ता न व
ज स्व रा वा त्म को दं ॥ स न्म नान न नं म टि नि आ त्मा नं को ध द व गा रा व य ह स्ता य ना दा म न्द क
रि क द कि स उ न् वाम पाश ध न न स्य द कि नि म श्रि क द दि न उ न् दा न् पा उ वाम प र्प न ध
नं व कु म्ब नं नि न स्य क्ति प ध्व ज र्म स रं क वं प्र व र्ग न पु न् वाम ना ना क सी द कि न उ न् न स्व का
म मृ ता वाम पाश ध नी उ वं न् पां ना क सी न्म णां रा नां स्व स य प नि वा ना ग र्प न स्मि यु नि

[illegible]

इव मनुजं कृत्वा माधिलक्ष्म
नामास्तु ॥ नमो मातुषाममयजमानादिनां सत्त्वात्मानं भनड्यास्येति मद्धि स श्री सागरहस्त
नानाव्याधिपीडाया वक कृतं न हननाजमकुीना कसी विप्राभाति स रुआ नीम हाय रुपाउः
मभाग म महासा नी प्रीण सर्व न लु मि माय ह नार्थ मी मं आ ग रु २ ॥ ०० ॥ वि ० ॥ य ० ॥
॥ व मा क मा दि मू ड वा न मां व म य र्थ क ॥ स ह द द ना म कु पु स ह न ल ज य न् ॥ न सि ली न स्य
क य न् ॥ न नः अ ग इ ध न ध क न क र वि य व र दि ति धा न (ध म स र्व र द वि ग न न ह न

थुंमः मानयव न स्त्रीवापूत्रकावापीउक आगदु २ वंन ॥ वजांक म मूडया विधाप ० न
नगापूजा विधि ॥ गरुडकनकाया न वन ॥ ओं ललावे पुंड्र सादि ॥ नाना न न न स
वर्तुताजन स्वका न धामहा मूर्ति महा प्रजा वरुन न देवा विधयो स्वस को पूजाम य
प्रवर्षिगं ला व यत् ॥ ननः य च न धम ग ता ॥ ओं च क व ज न ल धर्म कर्म स्थान म ॥ ॐ न म
सर्व न धम ग ता व ला कि न स म् न र र्द सा हा ॥ ॐ मि या ० ला ग ल पि पु म गि २ २ १ ल

न ० १ ०० अथा किं द द्या त ॥ ० ० नि न य ॥ ॥ वा रं प ० ॥ स म य ड ह ष्टु धि
पीउका क्रिया वापूत्र पाथवा सजीव साक साकिनी मानय २ धं पूना र सत्यव जि ता
न दा ल न ग मा ह तः एव च क प ल यं या नि न न ल न ल य ऊ द पि ॥ त स्मा त्म नू ष्या नां या म नि
म म ज न प द ध पि प न पी ज ल य ज चं च प न य स स्व मा प्र यः ॥ न स्मा उ ति वि म्व ति पि ॥ धु मा
नि द दा म्य हं सु व सु सु स्वा दा दि म् २ ३ मि २ स म् ३ ना र्क उ न ग द्दु ग च्छ ग ला क दा नि सा

निर्वर्तय २ ययमपि कदाचित्मानि विक्रय २ ॥ तदा कालं विन कश्चित्वा तत्समयवर्ति
त ॥ यय जीवामपि सक्ति रु दोगो ज्ञानयमया विज वि नि य या क न त क्क न न ति छ ति
ठ क्क न मूख न मूख न ॥ पी उ न न ता म न क यय म क्क नि मया स्ति न मया ज्ञान मा गु ण क थ
न च त वि य थ ॥ त स्मा ल्प ह दी य म न र्था त्या न पी उ य । व न्धि गं व न्ति गं वा पि खा दि ग न थ ॥
य य्वा । ए न पि ना नू र्वा नि पी प्र मू क न मू ख न । स म ड्रा क स्ति ग र्क न ०० दानी दी डि न प्र न य

गच्छत ॥ अथ ता तयैव गच्छ २ समय इति तयैव गच्छ ३ ना क सी सा कि ती नयैव गच्छ २ महा सारी
सर्वो प ड क पी ज न यैव गच्छ त गच्छ त । यदि वि य क न सर्व गच्छ २ मा नि व र्क य २ मा नि नी क य
नी नी क य । कदाचि मा हि मूखी र व ॥ ३ ॥ ग न ४ स ह दी ज म क्क न य त ॥ ग न ५ यं ज न ए न ४ ॥
ॐ ग इ ध न क क न क २ प्रिय य २ दि लि थान (थ म सर्व इ ड प्रि ग न न इ रे थं ज मा न य व म्पु व
पू र्वा का ह इ ह क्क न ४ ना ग इ ध मा ह मा न यि ह न न यो ध न न मां स र क्क २ मा ना स्ति र क्क २ मा :

नृद्वयकं लक्ष्मणमानविहानं लक्ष्मणमानयवर्गः॥ विष्णुप०॥ लादाया लंघाविहाव
कं लंखधनाथसंलुखानंगय॥ यूपनं कायका धूपधन॥ ॥ धनलि, लिमसावकं जोग
कलक्षय॥ यागिनीखण्डा सत्तावकं गणसत्तागसां वानकलक्ष्मा दंगं पिने दावाग संनं ५॥
वृषिसंनं ५॥ ॥ धनलि नकावकं लिनकं यथा॥ ॥ नानप धर्जना माहं विगा
नना दुर्गमया। सयारुखा दुर्गा कालं सर्वसा केर्ददुर्गिना। कृष्णाला रुखना ध्याय नदि

विष्णुमिगं उवि। मयून लंखनकवि दथवा लंखन कवि॥ ००॥ निष्ठी ३ धर्मसिद्धि सागर सन
स्याराणा आत्मविम्बवलि विक्षिप्तमाफ॥ ॥ समय॥ ग्यग्ग्व॥ ज्ञा ज्ञा च कृष्ण॥ ॥ ॥ ॥

दश



दश



Handwritten text on a palm leaf, likely a continuation of the previous page, containing several lines of script in an Indic script.



आगिनी खड्ग निज नल चक्रे क्लृप्ता मूलवलि क्लृप्ता ॥ धंलि ने.
 वय धंलि ने मे धंलि आल वि न्द्र. धंलि व उर्मान पूर्व भाग दक्षिः
 आस पाश्चिम का इ उ ल न रु क्ता ध निवान क र क्लृप्ता ॥
 दधु स म सिया द उ न य ज मान या। मूर्ति द य कं न य ॥
 अपि न ग्म क्ति रु या मूर्ति म धु ल वा वि सा च कं न य ॥
 द उ वि वि म ल ग्म क्ति रु या स मा धि म ल स क ता धु उः
 स न न या य मा ल रु ला ॥ उ र रु प। रु ग ता ॥





२ नमः भगवत्सूक्तम् ॥ मुखकालाद्युक्तं कर्मविधिमाह ॥ यश्च न तत्रात्मनो विमर्शं कर्मयत्नान्मदि
पिलुक्क पिलुक्काथवायथाभक्तिस्तु कल्पलंदशान् ॥ ॥ यि न न ग म ना दिक र्त्तव्यो ॥
पूजाद्यो वा नन्दनं दंसलानां दीर्घाकानां निरागकानां सर्वाकालभाक्तिकृत्मावल्लव ॥ एवं वयमः
पीदानीं नैरिह नैव लिदत्याहं मुखकालाद्युक्तं सवल्लिंदत्यादीर्घायां निरागिनां सर्वाकाल
भाक्तिकर्म कृत्वा ॥ ॐ मुनिश्महासूक्तं स्वाहा ॥ अटिनि आत्मानं रत्नं वाक्कर्म निशुक्लवर्णं

मकसखं द्विजु जास्यां वल दमडाधनं नस्य द्दि वदुमधुलमधु ॥ ४ ॥ कावउ क्ववर्धु ध्यात्वा
र्ववसुधु यथा गकि जयत ॥ नमः पूनः वलि ध्यात ॥ ५ ॥ स्वरावधु क्वादि धूयमान नन नं उ को
नं नल राजन महायनि सु र्ना रिनं ग दयन न वदुमधुलोपनिधु क्वाः का ना रुवा नृगः
॥ ६ ॥ ॥ ॥ का वक्षधियानं कर्था ॥ नमः रुलास्यां वलि सु क्वा निवदयत ॥ मकु ॥ ७ ॥ नमः सम
न वृद्धानां नमः सर्वतथा ग ना वलाकि न सक्त न २ ॥ सकथा प १० ॥ १० ॥ लि धनि क्वा ॥ १० ॥

यना ॥ १० ॥ क्वा सुवा ७ कविग निवा ना च ॥ १० ॥ वदुला सुवा सकथा प १० ॥ नतः मम सु नृनिधु
यजमान सया निवा ना ना सर्व भाग्य रु सर्वा काल मृत् ॥ १० ॥ नि के नृत्वा हा ॥ सर्वयमाना नायकी म
स्वका लिनी प्ररुगि ग ग नदी वाल का ये म प्र नृत्वा ॥ १० ॥ संता धिगं ला वयत ॥ थल सवा क लव
ति सपान कं क्वा यदु नं थल सं सं खन ॥ १० ॥ ॥ नमः धि ज्वा क्वा ये ला यत ॥ १० ॥ नमो वृद्धा ये ॥ वृद्धा ना
माहा ॥ १० ॥ नमो धर्मा मं ॥ १० ॥ नमो १० ॥ लि द्दि क्वा ॥ १० ॥ धर्मा ना माहा ॥ १० ॥ नमो मं ॥ १० ॥ मं ॥

नामादा ॥ महाहासविहासमहाप्रसादममगुरुमिषयजमानसदावेवावस्था नानागान
जायितुमागमासुविधानजादयाउक्तव। वरुविंशतिवकुलगनजानिपीउभक्तिंकरुत्वाहा। य
हाहवदवग्रहनागला। असुरग्रहामध्वग्रहा। कमागुग्रहा। राजग्रहा। दिव्यवागीनिष्ट
आलिभक्तिंकरुत्वाहा ॥ विष्टगनमानगलभूतखननाज। यद्वमयकलीयमसमयउक्त
पिभवादिविष्टजानिवकुवागीनिष्टआलिभक्तिंकरुत्वाहा ॥ विष्टगनमानगलभूतखननाज। यद्वमयकलीयमसमयउक्त

भक्त्यादिसाधारदा

धनिकावधत्तं

॥ नमः सावना ॥ यदनायकीमूर्खानि कासिनिगंगानदीवात्तकापम
नानां दक्षिणकनआयुधजवामरुक्त आयुधलगुहीननममगुरुमिषयजमानसदावेवा
नसत्यानामायुधगननधनपलायनायुधः धननानयआनयपुरुकलगमानयित्वाः
यजमानस्यदुरुमिनिविक्तयत् ॥ कुरुदीयानामायुधकुंयठित्वायुधगनसावयम् ॥ नमः
वल्लिपुत्ररुमीनिक्रियत् ॥ ॥ मूर्यकालागुक्तामान्यकालाद्वृत्त्यविधिः ॥ अठियानः

ॐ

त्रि

पुनः सदाचार्यदत्तकन्दनशापानधर्मदत्तनागमानककानगादनधमः गुनधमश्च नना
दुनंसर्वेषां न कुरु ॥ ॥ गुरुकानाया मकुः ॥ ॐ नमावद्याय ॥ ॐ नमाधर्माय ॥ ॐ नमा
संघाय ॥ नमः ॥ ॐ आरु वरु कुरु कुरु ननु क हिलि मिलि सुरु क सिलु नमारगवये स
ह ॥ ॥ सर्वमंगल ॥







